लैंटाना तुम्हें कौन लाया, क्यों लाया?

अनुपमा झा

लैंटाना की सुनहरी नारंगी पंखुड़ियों वाले पुष्प दल से नज़र नहीं हटती है। इसके छोटे-छोटे नलीदार फूल अपने आप में बहुत आकर्षक होते हैं। इन खूबसूरत नाज़ुक फूलों की जैसे रक्षा करती होती हैं इसकी रोमिल अंडाकार खुरदरी पत्तियां, जो झाड़ीनुमा लता की मज़बूत और कड़ी टहनियों पर सीना फैलाए अपने होने का ऐलान करती रहती हैं। टहनियों पर बिलकुल आमने-सामने खड़ी दो पत्तियां जैसे दो दरबान हों। झाड़ियां इतनी फैलती हैं कि मजाल है जहां ये मौजूद हैं वहां कोई दूसरा पौधा अपनी जड़ जमा पाए।

इतने खूबसूरत फूल और छोटे-छोटे, प्यारे-प्यारे बेरी जैसे फलों की यह झाड़ी हमारे किसानों को बिलकुल नहीं भाती क्योंकि अमरीका और ऑस्ट्रेलिया से आया यह पौधा एक ओर तो हमारी फसलों के साथ प्रतियोगिता करता है और जीत जाता है। साथ ही यह हमारे मवेशियों के लिए भी खतरनाक है। इस पौधे के सारे भाग, खासकर पत्तियां और कच्चे फल, ज़हरीले होते हैं। अक्सर इलाके के नए मवेशी इस हरे-भरे पौधे की तरफ आकर्षित होते हैं और खतरे को न्यौता देते हैं। इसे खाकर वे बीमार पड़ जाते हैं। इसके इसी स्वभाव को देखकर इस पौधे की खरीद फरोख्त पर रोक लगा दी गई है। पर इसका फैलाव रोकना आसान नहीं है।

इसके प्यारे-प्यारे पके हुए बैंगनी बेरी फल पक्षियों को आकर्षित करते हैं और ये पक्षी उन्हें दूर-दूर तक पहुंचा देते हैं। वातावरण के स्वभाव से इन्हें डर नहीं लगता। सूखा, कड़ी धूप सहता हुआ क्षेत्र हो, या फिर पहाड़ी क्षेत्र के छायादार जल मार्ग, लैंटाना के लिए सब अनुकूल हैं।

मध्य और दक्षिणी अमरीका से हमारे देश में यह पौधा 1890 में सजावटी पौधों के साथ आया। फिर इसने हमारी ज़मीन पर खुद का अधिपत्य जमाना शुरू कर दिया और इस कदर फैला कि लगता ही नहीं है कि यह प्रवासी है। आज इसे यहां से हटाना एक बहुत बड़ी चुनौती है क्योंकि इसे काटकर हटाने की कोशिश ने इसे और तेज़ी से फैलाने में मदद की है। अमरीका में एक परिवार ने इसे अपने फार्म से हटाने का निश्चय किया और रोज़ अपने फार्म जाकर एक घंटे तक अपने हाथों से लैंटाना के पौधों को जड़ से उखाड़ते थे।

दरअसल लैंटाना की झाड़ियां इसकी घनी मज़बूत लताओं के सहारे आराम से किसी भी सहारे का इस्तेमाल कर फैल जाती हैं। टहनियों पर छोटे-छोटे कांटे और हरी अंडाकार पत्तियों पर पाए जाने वाले रोम इसके खुरदरे व्यवहार से हमें परिचित कराते जान पड़ते हैं। इन पत्तियों से अजीब-सी गंध भी आती रहती है।

कुदरत ने इस खुरदरे, कठोर-से पौधे को खूबसूरत फूलों से सजाया है। पीले, सफेद, नारंगी और लाल रंग के छोटे-छोटे फूलों के गुच्छे इन्हीं टहनियों और पत्तियों के बीच सजे होते हैं, जैसे हमें पुकार-पुकार कर कहते हों - रूखेपन के बीच भी कोमलता और सुंदरता होती है। अलग-अलग रंगों के फूलों को बड़े कायदे से सजाए फूलों का गुच्छा तितलियों और छोटे पक्षियों का पसंदीदा बन जाता है। वर्विनेसी परिवार का यह सदस्य ब्लैक सेज, सेज, टीक बेरी आदि नामों से भी जाना जाता है। ऑस्ट्रेलिया में भी इस पौधे को लेकर काफी चिंता दिखाई पड़ती है क्योंकि वहां भी इस पौधे के बेलगाम फैलाव का असर साफ नज़र आता है।

एक तरफ तो हम सब इस पौधे को अपने क्षेत्र से हटाना श्रेयस्कर समझ रहे हैं, दूसरी तरफ हमारे देश की ही कुछ जनजातियां इसे अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने का माध्यम बना रही हैं। जी हां, दक्षिणी भारत की सोलिंगा, कोरवा और पलियर जनजातियों के सदस्यों ने इस पौधे की मज़बूत, लचकदार टहनियों की मदद से तरह-तरह के खूबसूरत फर्नीचर बनाना शुरू कर दिया है जो हमारे ड्राइंग रूम की खूबसूरती बढ़ाते हैं। कर्नाटक, तमिलनाडु और उत्तरांचल की जनजातियों ने इस झाड़ी की टहनियों को

टोकरी, फर्नीचर और दूसरे उत्पाद बनाने में इस्तेमाल कर इसकी उपयोगिता तो स्थापित कर दी है परंतु इसके बावजूद हम इससे बचने के ही उपाय सोच रहे हैं ताकि हमारी फसलों के उत्पाद पर अधिक असर ना आए। ***(स्रोत फीचर्स)***

लैण्टाना कैमरा, मैं तुम्हें ले आई, क्यों?
तुम सूखे को बर्दाश्त कर सकती हो?
या कि इसलिए कि
तुम सूखे का प्रतिरोध कर सकते हो?
मैं भूल गई तुम्हारे लेबल पर लिखा था
सन्तोषजनक
तुम्हारी सुनहरी और नारंगी बगावती लौ के गुच्छे
मुझे मजबूर करते हैं टकटकी लगाकर देखते रहने को
भविष्य की ओर देखती हूं तो चकित हो जाती हूं
कि तुम्हारी परिपक्वता
उपेक्षा को संभाल सकती है।
लैंटाना कैमरा - मज़बूत, देशज, घुसपैठी
सूर्यास्त बिखेरती हुई तुम मेरे ऊपर बढ़ती जाती हो।
- डेलिया कोरिगन